भारत माता की

पूजा का व्रत मैंने क्यों लिया ?

क्लीवत्वं हर देशेशि
पुत्रत्वम् देहि दे हिनः ॥

श्री श्री बाबा नरेन्द्रनाथ ब्रह्मचारी

अनुवादक व प्रकाशक :
काशीनाथ चौधरी
देवसंघ मठ
पो० बड़ा बहेरा
कोन्न नगर (हुगली)

मुद्रक :—
सावित्री प्रिंटिंग
२७, मल्लिक स्ट्रीट
कलकत्ता-७

मूल्य २५ न० पै०

...र भारतमाता की पूजा का व्रत क्यों लिया ?

ऋषि बंकिमचन्द्र ने वन्दे मातरम् मंत्र से भारत माता का
...बोधन संगीत .ाया था। बंगाल के इन ऋषी की वाणी
...सारे भारतवर्ष को एक दिन जागृत कर दिया। उसी मंत्र
...आराध्य देवी की प्राण प्रतिष्ठा की थी इस देश के सिद्ध
...र पुजारी ब्रह्मऋषि श्री श्री सत्यदेव ने। बंगला सन् १३३२
...पराधीन भारत को दासता की श्रृङ्खला से मुक्त कराने की
...णा देने के हेतु उन्होंने देशात्मबोध या देश मातृकार पूजा'
...मक ग्रंथ लिखा। ग्रंथ लिख कर ही वह चुप या निवृत न
...। उपरन्तु देश मातृका यानी अखण्ड भारत माता के
...नचित्र की रचना कर-कर उसके द्वारा पराधीन भारत की
...क्ति के लिये प्रार्थना करने का मंत्र एवं पथ भी उन्होंने अपने
...न्तरंग यानी नजदीकी भक्तों को निर्धारित कर दिया था।
...स मार्ग की, उस कौशल की पूर्ण शिक्षा प्रदान की थी। उन
...नों देशवन्धु चित्तरंजनदास के घर पर भी यह पूजा अनु-
...ठत हुई थी। ब्रिटिश साम्राज्यशाही के गुप्तचर उस समय
...हर्षि एवं उनकी युवक शिष्य मण्डली पर कड़ी नजर रखते
...। ब्रह्मर्षि देव के तृतीय भ्राता के सविनय अवज्ञा आन्दोलन
...गिरफ्तार होकर जेल जाने के बाद आश्रम पर पुलिस की
...ष्टि और भी कड़ी हो गई एवं पुलिस तत्परता में बृद्धि भी
... गई। उन दिनों देश भक्त एवं स्वाधीन भारत के प्रथम
...ष्ट्रपति स्वर्गीय राजेन्द्र प्रसाद, मि० ... ...

बाबू, विनोबा बाबू प्रभृति जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अगुआ बने हुये शहर-शहर एवं ग्राम - ग्राम में भ्रमण कर जागृति की लहर जगा रहे थे एवं यह स्थिर हुआ कि करमाटांड का भी वह लोग परिभ्रमण करेंगे। अधिकारियों को यह विदित होने पर स्थानीय एस० डी० ओ० (जामताड़ा) ने करमाटांड के नागरिकों को सूचित किया कि जो कोई इन राजकीय शत्रुओं को स्थान या आश्रय देंगे उनके विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जायेगी। लोग पिछड़ने लगे। उस समय ब्रह्मर्षि ने देश भक्तों के अनुयायियों के माध्यम से राजेन्द्र बाबू वगैरह को आश्रय का आतिथ्य स्वीकार करने के लिये निमंत्रित किया। सम्वाद एस० डी० ओ० साहेब के कान में गया। उन्होंने ब्रह्मर्षि देव को सूचना दी कि बाबू राजेन्द्र प्रसाद वगैरह को आश्रम में स्थान देने पर आश्रम को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जावेगा।

ब्रह्मर्षि देव ने संवाद वाहक को मन्द मुस्कान के साथ जवाव दिया कि ऐसी कार्यवाही अनुचित होते हुये भी उचित ही है। यदि देश के सपुत्रों की सेवा में आश्रम उजड़ भी जावे तो आश्रम के लिये सौभाग्य का विषय होगा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि डा० राजेन्द्र प्रसाद, मि० अब्दुल वारी, विनोबा बाबू, शशी बाबू वगैरह भारत माता के सुपुत्रों ने आश्रम का आतिथ्य ग्रहण किया एवं करमाटांड में सभाओं का आयोजन भी किया।

इन गुप्त साधक के विषय में समाचार पत्रों में कोई प्रकाशन में होने पर भी देश के कर्णाधार प्रायः ही इनसे परिचित थे।

आज देश में विपत्ति के बादल फिर मंडरा रहे हैं। भारत माता ब्रिटिश की दासता से मुक्त हो चुकी किन्तु अहंकारी चीन, पैशाचिक पाकिस्तान एवं उनके समर्थक पंचमार्गियों ने चारों तरफ से भारत माता को आतंकित एवं विपदाग्रस्त कर रखा है। इस विपत्ति कालमें यदि मांकी निद्रा न टूटी एवं और मां ने सुबुद्धि नहीं दी तो ही भारतवाषियों की दुर्दशा की कोई सीमा न रहेगी। इसीलिए ऋषि बंकिमचन्द्र रचित संगीत एवं ब्रह्मर्षि प्रदर्शित देश मातृका की प्रान प्रतिष्ठा व पूजा की दिव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर हमने भारत माता की पूजा का व्रत ग्रहण किया है।

मां देश वासियों को सुबुद्धि प्रदान करें—मां की पूजा सार्थक हो—देश की सन्तान पुनराय संघबद्ध होकर 'मां' को मां कहकर पुकार उठे।

एकबार तोरा मां बोलिया डाक्,
जगत जनेर श्रवन जुड़ाक्।
हिमाद्रि पाषाण के दे गले याकू,
मुख तुले आज चाहो रे॥

बंगाली सन् १३३३ की अक्षय तृतीया के कुछ दिन पूर्व ब्रह्मर्षि ने मेरे हाथ में 'देश मातृ का' पुस्तक व अखन्ड भारत माता का एक मढ़ा हुआ चित्र देते हुए आदेश दिया कि आगामी

अक्षय तृतीया को ही माता की पूजा आरम्भ करनी होगी। उस समय, हम लोग करमाटांड़ में अवस्थान करते थे। जब तक देश स्वतंत्र न हुआ ब्रह्मर्षि आश्रित बहु संतानगण अक्षय तृतीया के दिन देश मातृका की पूजा करते थे। शत्रुओं की वृद्धि व बुद्धिनाश के लिए विविध मंत्रों द्वारा होमाग्नि में आहुति देते थे। कल की सी बात है। जिस साल नेताजी सुभाष चन्द्र अपने एकान्त भाव में घर से निरुद्देश हुए थे। उसी वर्ष देश मातृका पूजा के उपरांत एक भावमय अवस्था में उनके चित्र में नेताजी के ललाट पर हवन की भष्मि का तिलक किया गया था एवं उनकी दीर्घायु एवं विजय गौरव से गौरान्वित होने की आशीर्वाद कामना की गई थी। देश की स्वाधीनता के बाद बहुत दिनों से यह पूजा नहीं हुई।

भारत के वर्तमान दुर्दिनों को देखते हुए ही शायद स्वर्ग लोक से ब्रह्मर्षि की प्रेरणा का अनुभव हो रहा है—भारतमाता भी जैसे जैसे करूणा पुकार कर रही है।

चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के बाद गत दो वर्षों से बहुबार गंभोर रात्रि में एक स्वर्गीय शक्ति मेरी अन्तरात्मा को विचलित कर रही है। विशेषत: गत जनवरी महीने में जब पूर्व पाकिस्तान में आसुरिक तान्डव नृत्य चल रहा था वहां के निशस्त्र हिन्दुओं के ऊपर, उस समय शरीर अस्वस्थ रहने पर भी अन्दर में तीव्र सन्ताप का अनुभव हो रहा था। शायद इसी शक्ति की ही प्रेरणा से।

भारत की वर्तमान शासन मंडली को धिक्कार देने का मेरा उद्देश्य नहीं है। मां उन्हें सुपथ पर चलावे, सद्बुद्धि एवं बल प्रदान करे एवं वे लोग अपना-२ गद्दी या मंडली (पार्टी) का मोह त्याग कर मां की ओर ध्यान दें। वे यह अनुभव करें कि सारा देश ही उनका है। सिर्फ भोट की आशा में अपनी पार्टी को कायम रखने के लिये अपने विवेक को त्याग कर वे जिस भूल पथ पर अग्रसर हो रहे हैं—उस पथ से विरति होकर वे पुनराय मां के चरनों में आश्रय लें और मां की शक्ति से शक्ति लाभकर मां की सेवा का व्रत लें, यही अभिलाषा लेकर हम लोग फिर पूजा का संकल्प ले रहे हैं।

"यद्वक्षसि वयम् जाता यदगें नित्य संस्थिता।
पुनर्यत्र लयं यात तं देशं प्रनमाम्यहम्॥

जिसके वक्षस्थल पर जन्म लिया है, जिसके वक्षस्थल पर अवस्थान कर रहा हूं और अन्त में जिसके वक्ष स्थल में विलीन हो जाना है, हे देश मातृका, आपको प्रत्यक्ष देवी स्वरूपा मान कर शुभ बुद्धि लाभ की अभिलाषा से आपकी अर्चना का व्रत मैं ले रहा हूँ।

जिस देश में पिता-पितामह वगैरह पूर्वजों ने जन्म ग्रहण किया एवं जिस भूमि में उन्होंने अन्तिम श्वांस त्याग किया, हे स्नेहमयी जननी भारत माता - तुम्हें श्रद्धासहित पुष्पांजली देने के हेतु मैंने पूजा का व्रत लिया है। हमारी पूजा सफल हो। तुम्हारी दिव्य प्रेरणा से देश के रण बांकुरे जाग उठे। न्याय

और सत्य जयी हो। अधर्म्म और अधार्मिकों का नाश हो। तुम्हारा पुज्य एवं पुण्य वक्षस्थल शीतल हो।

बन्दे मातरम्। ॐ शांति हरी ॐ

विनीत

ग्रंथकार

पुनराय भारत माता का जागरण व पूजा

बलो बलो बलो सबे,
शत बीणा बेणू रबे।
भारत आबार जगत सभाय,
श्रेष्ठ आसन लबे॥

भारत माता की सात सौ साल पुरानी बेड़ियां टूटी थी बंगाल और पंजाब का अंग-भंग कर, उनके अन्जर-पन्जर चूर्ण कर एवं सिन्ध को बलिवेदी पर चढ़ा कर। इस स्वाधीनता प्राप्ति के प्रेरक पुजारी व कर्मियों ने बंगाल व बंगाल की धरती में ही पंजाबके गोदमें ही प्रथम जन्म ग्रहण किया था। ऋषि बंकिम चन्द्र के 'वन्दे मातरम्' महामन्त्र से जागृत होकर सर्वप्रथम बंगाल के विप्लवी वीरों ने देशवासियों की निद्रा भंग की थी। कनाई लाल, खुदीराम, प्रफुल्ल चाकी, सत्येन दत्त प्रभृति वीरोंने बृटिश साम्राज्यशाही के फांसी मंच पर आत्म-उत्सर्ग किया था। तदोपरांत महाराष्ट्र के मान्य नेता तिलक,

पंजाब के वीर केशरी लाला लाजपत राय और सौराष्ट्र के महात्मा गांधी भारत माता के पूजारी बने। महात्मा गांधी की अहिंसा नीति से देश में जन-जागरण अवश्य हुआ मगर क्षात्र तेज का ह्रास हुआ। कांग्रेस के साथ खिलाफत आंदोलन का संगठित कर गांधी जी ने भूल की। मुसलमानों को संतुष्ट करनेके प्रयत्नमें पद-पद पर अनेक प्रकारसे अपमानित होते रहे। और ब्रिटिश गवर्नमेंट की प्रवचनोंसे प्रेरित लोभी मुसलमानों को गृह विवाद की धमकियों में आकर देश विभाजन के लिये बाध्य हुए परंतु चतुर ब्रिटिश शासक गांधी जी की अहिंसा नीति के सामने कभी हार नहीं मानते। यदि बीर हिटलर के तीव्र आक्रमण से वे अपंगु न बने होते और नेताजी सुभास चन्द्र बोस की आजाद हिन्द सेना के प्रतिशोधात्मक आक्रमणों से अक्रान्त न हुए होते तो देश के बीर हिन्दू सन्तान जब फांसी के तख्तों पर झूल रहे थे जेल की यातनाओं को झेल रहे थे, अन्दामन द्वीप भेजे जा रहे थे, देवली व हिजली कैम्प में नजर बंद थे उस समय ब्रिटिश कुमन्त्रनाओं में आकर मि० जिन्ना मुस्लीम लोग का आयोजन कर देश के अन्दर विद्रोह का भय दिखा रहे थे। अहिंसा वादी कांग्रेसी नेताओं को गांधी जी के सम्बन्धी श्री राज गोपाला चार्य ने अति बुद्धि का परिचय देते हुए देश बिभाजन के प्रस्ताव पर राजी किया। अनुमोदन किया नेहरूजी जैसे कांग्रेस सेवकों ने देशवासियों को यह सन्देश भी सुनाया गया कि देश विभाजन की स्वीकृति और इसके फलस्वरूप

ब्रिटिश के देश त्याग करने के बाद कोई मुसलमानों का विरोध नहीं रह जायगा एवं पुनः अखण्ड भारत की स्थापना होगी। मुस्लिम लीग कर्तृक हिन्दू-मुस्लिम दंगे, पंजाब, बंगाल, बंबई, लखनऊ, अहमदाबाद, देहली वगैरह में बार बार चल रहे थे। रक्तपात और भो बढ़ जाने के भय से अहिंसा मतावलम्बी लोगों ने महात्मा गांधी की इच्छा व मत न होते हुए भी देश विभाजन को स्वीकार कर लिया।

कहानी प्रसिद्ध है कि जब ब्रिटिश फौज मनीपुर राज्य पर आक्रमण करने के बाद किसी प्रकार भी मनीपुर वीरों को पराजित न कर सकी तो उन्होंने चालबाजी का आश्रय लिया। हिन्दू गोमाता के भक्त के भक्त हैं। मनीपुर बासी विशेषत: गो हत्या को जघन्य पाप मानते हैं - इस लिये अग्रिम में असंख्य गौओं को रख कर ब्रिटिश ने आक्रमण किया। मनीपुर सेना ने गो हत्या के डर से अस्त्र त्याग कर दिये। ब्रिटीश मनीपुर में घुस गये एवं सेना के खाद्य के लिये हजारों गायों की हत्या शुरू कर दी। अगर मनीपुर वासी उस समय गलत भावनाओं को त्याग कर एवं कयेक सौ गायों की हत्या कर भी अगर ब्रिटिश सेना को रोक देते तो मनीपुर की एवं हजारों हजारों गौओं की हत्या न होती। अहिंसा बादी कांग्रेसियों का भी यही हाल रहा। देश में दंगे होंगे, लोग हत्या होगी इत्यादि ब्रिटिश की चालों को न समझ कर मी० जिन्ना की इच्छा मुजब देश के बंटवारे के लिये सम्मत हो गये। परिणाम भयंकर हुआ। कल-

कत्ता, नोवाखाली, ढाका, बंबई. में कई सहस्त्र व्यक्तियों को प्राण त्यागना पड़ा। बिहार में दशों हजार लोगों का नाश हुआ। पंजाब में खून की नदीयां बह गई। यानि की सारे भारत में ही काफी जन-हानी हुई। वास्तविकता वादी मि० जिन्ना ने उस समय लोक विनिमय का यह प्रस्ताव दिबा यानि पाकिस्तान नाम्नी जिस देश को उन्होंने जन्म दिया था भारत के समग्र मुसलमान वहां चले जाय, एवं पाकिस्तान का हिन्दू सिख समुदाय खण्डित भारत में चले आवें। अदूरदर्शी विवेकहीन और भाव प्रपूर्ण कांग्रेसियों ने ब्रिटिश लार्ड और लेडी माउन्ट बेटन के कुपरामर्श की वास्तविकता को न समझा भावना के वशीभूत उन्होंने यह घोषणा की कि हमारा राज्य धर्म निरपेक्ष रहेगा। यहाँ हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन, बौध, आर्य्य, अनार्य्य, द्रावीड़, चीन, हूण, शक, पठान, मुगल प्रभृति सबका सामान स्थान ही यहां होगा। 'दो राष्ट्र' के आधार पर देश का बटवारा किया गया। फिर भी भावावेष की आड़ में काल नाग स्वरूप मुस्लीम लोग के जहर से पोषित कई पंचगामी दलों को रहने दिया गया।

बीर पंजाब ने अपने बाहुवल से हिन्दू मुसलमान समस्या का हमेशा के लिये समाधान कर लिया। पर बंगाल वासियों ने कांग्रेस के भाववाद के सामने आत्म विक्रय कर दिया—देश के विभाजन को स्वीकार करते हुए भी जन-संख्या के आदान प्रदान को नहीं माना। कांग्रेसी नेताओं ने पुनराय घोषणा

की कि पाकिस्तान निवासी अल्पसंख्यक विपदग्रस्त होने प
कांग्रेसी लोग उनका उद्धार करायेंगे। किन्तु १६/१७ साल
बंगाली-पाकिस्तानी बंगाली-पाकिस्तानके हिन्दू बंगाली स्त्री पुरु
वहां पर लांछित बेइज्जत एवं निर्यातित हो रहे हैं। बीच-बी
में पूर्व पाकिस्तान के हिन्दुओं के खून की नदियां भी बह जात
है। लाखों स्त्रियाँ बेआबरू होती हैं। स्त्री, पुरुष और बाल
निर्दयता से वध किये जाते हैं। यह राक्षसी ताण्डव नृत्य पू
पाकिस्तान में १६।१७ साल से चल रहा है। पाकिस्तान क
वही प्रेसीडेंट वही बनता है जो सबसे ज्यादा अत्याचारी, आ
रिक वृत्तियों से परिपूर्ण एवं पर धर्म्म असहिष्णु हो। लया
अली से लेकर सबका मूल मंत्र यही है कि पूर्व पाकिस्तान
हिन्दुओं की हत्या करो, स्त्रीयों का सतीत्व नष्ट करो, उन
सर्वस्व लूट लो, घर द्वार जला दो, एवं नंगा कर देश के बा
निकालो। भारत के अहिंसावादी गवर्नमेंट उसे देखते
भी अनदेखा कर देती है या डर से कुछ बोलती नहीं।

इधर सिरों पर कांटों के मुकुट पहन कर भारतीय सिंहा
पर समारूढ़ होनेवालों ने कभी यह देखने का प्रयत्न नहीं कि
कि सिर पर क्या झूल रहा है या पावों के पास क्या पड़ा
उनके सिरों के उपर लम्बे-२ तीक्षण अस्त्र झूल रहे हैं और
के निकट हमेशा भूकम्प के धक्के आरहे हैं। उधर आदर्श
के प्रतीक महात्मा गांधी का अनुसरण करते हुए और समग्र वि
में प्रसिद्धि के लालायित कांग्रेस नेताओं ने पंचशील के मंत्र

आविष्कार किया एवं एशिया और अफ्रिका के देशों को इस मेल से दीक्षित करने का प्रयास करने लगे। निरस्त्री करण की बाणी लेकर नेहरू जी ने देश-विदेश का भ्रमण शुरू कर दिया। किन्तु वास्तविकता वादी धुरंधर लोग उच्छास वादी श्री नेहरू को अपने हाथ में पा बंदर की तरह नचाने लगे।

भारत ने बैराग्य का अनुसरण किया जबकि चीन एवं भारत के ही विच्छिन्न अंग से निर्मित पाकिस्तान दोनों ही अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित हो रहे थे। ब्रिटिश अमेरिका एवं उनके अनुयायी पाकिस्तान के लिये बने। चापलूसी एवं दगाबाजी करते हुए बैरागी कांग्रेसियों को यह जनाया कि पाकिस्तान को अस्त्र दीये जा रहे हैं कम्युनिष्टों का दमन एवं संहार करने के लिये! यह अस्त्र भारत के विरुद्ध व्यवहार में न लाये जायेंगे किन्तु विधि की ऐसी विडम्बना! पाकिस्तानियों ने कट्टर कम्युनिष्ट चीन से हाथ मिलाया। एवं भारत के गुप्त शत्रु ब्रिटिश ने उसमें भी पाकिस्तान के साथ प्रेमदान करने में पीछे ना हटे।

भारत त्याग के समय उनकी केवल मात्र यह ही अभिलाषा थी कि उनके विबपुल पाकिस्तान के मुशलमानों द्वारा भारत को बारबार पीड़ित किया जाये ताकि दुःखी एवं हताश होकर भारत उनकी आश्रय प्रार्थना करने के लिये फिर मजबूर हो। उन्होंने काश्मीर को लेकर कलह खड़ा कर दिया। जिस समय पाकिस्तान आक्रमण कर काश्मीर में अग्रसर हो रहा

था तब अचानक भारतीय सेना की मोह नीद्रा टूटी एवं उन वीरों ने पूरे परिश्रम से पाकिस्तान को वाधा दी। ब्रिटिश एवं अमेरिका प्रमाद का अनुभव करने लगे। अपनी दुर्नीति के जाल को विफल होते देख लेडी माउन्ट बैटन को दूत बनाकर कांग्रेस नेताओं के पास भेजा। दो दिन और युद्ध चल जाने पर जो काश्मीर एक दम निष्कंटक हो जाता, उसी काश्मीर का कुछ हिस्सा पाकिस्तान के दखल में रहते हुये ही उसने कांग्रेसियों को स्वस्ति का मंत्र सुनाते सुनाते सुरक्षा परिषद में ले जाकर हाजिर कर दिया। भक्षकों की एक धुरंधर समिति के सामने कांग्रेसियों ने रक्षा के लिये धरना दिया। चौदह पन्द्रह साल के लंबे समय से यह सुरक्षा परिषद ब्रिटिश एवं अमेरिकन पैंतरेबाजी के बदौलत एवं पाकिस्तान की पूंछ पकड़े २ काश्मीर के विषय पर भिन्न २ प्रकार के नाटक खेल रही है। यह शायद सबको ही विदित है।

उधर अत्याचारी चीन ने तिब्बत पर दखल कर लिया। भाव प्रवण कांग्रेसी सरकार ने तिब्बत के लिये आंसू बहाते हुए, पराजित दालाई लामा को सिर पर चढ़ाकर चीन के प्रति उपहास एवं हंसी हँसने लगे। चीन क्रुद्ध हो गया। उत्तरी प्रांतों की दिशा से हिमालय पर आक्रमण कर चीन भारत की ओर अग्रसर हुआ एवं नेफा और लद्दाख को करीब-२ दखल कर चुका था। भारत के लाखों सेनानी एवं वीर सन्तान युद्ध में मारे गये या गिरफ्तार हो गये। अस्त्रहीन व बैरागी कांग्रेसी तब

निरुपाय होकर देशवासियों के पास विलाप शुरू कर दिया। सिर्फ पंचमांगियों को छोड़कर समग्र भारतवासी देश के मंगलार्थ संघवद्ध हो गये क्योंकि प्रत्येक चिन्ताशील व्यक्ति यह जानता है कि देश सिर्फ काँग्रेस का ही नहीं है, उपरंतु प्रत्येक भारत-वासी का है। कतिपय जाति, धर्म व विवेक हीन भ्रष्ठ हिन्दू और कम्युनिष्ट चीनके पैसे से पुष्ट होकर पाकिस्तान की प्रेरणासे भारत में सर्वत्र विशेषतः काश्मीर और पश्चिम बंग में उनकी छोटे २ गुप्त केन्द्र बने। कांग्रेस गवर्नमेंट की आंखों में धूल झोंककर लाख लाख पाकिस्तानी आसाम, त्रिपुरा, पश्चिम बंग, यहां तक कि समग्र भारत में घुस आये एवं उपरोक्त गुप्त का आयोजन करने लगे। सिर्फ इतना ही नहीं, पाकिस्तान के अंसार, पुलिस दल, वगैरह सभी भारतकी सीमा का हमेशा उलंघनकर यहांसे गाय, भैंस, बैल, सीमा निवासी भारतियों की धन सम्पत्ति, यहां तक कि मनुष्यों तक को अपहरण कर ले जाते हैं। भारत के नेता उनकी रक्षा करने में असमर्थ हैं। पाकिस्तान यहीं नहीं रुकता। गोपन तरिके से सीमा पार कर भारतीय फौज पर आक्रमण किया व उनकी हत्या की जाती है। भारत के कर्नल तक को कैदी बनाया गया है। बेतार से भारतीय सैनिक विमान को दिक्भ्रम कराकर पाकिस्तानी इलाके में ले जाया गया एवं ध्वंस कर दिया गया। भारत के नेता सिर्फ कठपुतली की तरह निरपेक्ष दर्शक बने रहते हैं। हाय रे भाग्य! भारत माता क्या तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है? पाकिस्तान हिन्दू विद्वेषी होते

हुए भी व भारत एवं पाकिस्तान के अधिकांश मुसलमान अपने
जाति और देश के पूर्ण पक्षपाती एवं पृष्ठ पोषक होते हुए ठेकु
कांग्रेसी नेतागण धर्म निरपेक्षता के आदर्श वाद का नारा बुल
करने के हेतु तथापि भारत के शासन कार्य में पाकिस्तान के प्रि
बन्धु बहुसंख्यक मुसलमानों को नियुक्ति किया। यद्यपि दे
का बंटवारा हो चुका। विश्व के राष्ट्रों का कर्णधार अविवेक
कांग्रेसियों की राजनैतिक ज्ञान से विहीन विवेक शून्यभा
प्रवनता देखकर मन ही मन हंसने लगे। पंचगामी पर्दे व
ओट में रहकर घर की खबरें शत्रुओं को पहुंचाने लगे। आ
इन कांग्रेसी शासकों के गलतियों की वजह से भारत चारों ओ
से विपिन्न हो रहा है। १७—१८ वर्ष बाद भी भारत का अ
भंडार खाली है, लाख-लाख शिक्षित युवक बेकार हैं। लाख
घर विहिन कभी स्यालदह स्टेशन पर, कभी गाछ के नीचे, कभी
फटे तम्बू के नीचे पशु और पक्षियों से भी बदतर जिंदगी बित
रहे हैं। उधर धन कूबेर एवं कांग्रेस के कर्णधार कलकत्त
दिल्ली, मम्बई, मद्रास व देश के अन्य बड़े २ शहरों में नाच-गा
व राव-रंग में डूबे हुए हैं। उनका तेज नष्ट हो चुका है। वी
युवक नेता, पथ-प्रदर्शक के अभाव में उद्भ्रान्त की तरह दि
काट रहे हैं। देश शायद फिर रसातल में गया प्रायः। दे
के भीतर शत्रु, बाहर शत्रु, सर्वत्र शत्रु ही शत्रु। सिर्फ रूस औ
मुट्ठीभर देशों को छोड़कर सारा विश्व भारत का शत्रु। समझ
दार भारतवासी आज गम्भीर शोक एवं दुःख से परिपूर्ण

इसीलिये इस दुर्दिन में मां को फिर जगाना होगा। देश प्रेमिक मुकुन्द दास के सुर में सुर मिलाकर बंगाली वीर फिर गायेंगे: –

जागो मां जागो मां कुल कुन्डलिनी।
तुमि ना जागले मातः जागिवे ना धरनी॥

फिर ऋषि बंकिमचंद्र के सुर से सुर मिलाकर देश के नवयुवक उच्च स्वर में गा उठेंगे :—

द्वालिःश कोटि खर कर वाले।
अबला केन मां एतो बले॥

मां तुम्हारे इतने बलवान पुत्र रहते हुए भी तुम अवला कैसे ? बहु वीर सन्तान अभी भी तुम्हारे स्तन पान कर रहे हैं। तुम्हारी नदियों का शीतल सुमिष्ट जाल पान करते हैं, तुम्हारे वृक्ष सुशीतल छाया एवं मधुर फल देते हैं तुम्हारी ही ठंढी हवा शरीर के दावानल को शान्त करती है। तुम्हारे सब पुत्र मातृ द्रोही या नपुंसक नहीं हैं।

"आमरा धुचावो मा तोर कालिमा।
मानुष आमरा नहीं तो मेष॥"

मां, तुम हमें फिर सुबुद्धि दो ताकि उसकी प्रेरणा से फिर अपना मार्ग निर्धारित कर एवं उस मार्ग का अवलम्बन कर शत्रुओं को बाधा देते हुए, व उनका नाश करते हुए हम तुम्हारा शासन जगत को सभा मण्डली में सर्वोच्च बनायें। क्या चालीस करोड़ सन्तानों की जननी कुछ विवेकहीन, मूढ़मति व्यक्तियों की प्रवंचना से फिर अपमानित व पद दलित होगी ?

हे भारत जननी आत्मज्ञ ब्रह्मर्षि सत्यदेव का मार्ग अनुश
करते हुए तुम्हारे चरनारबिन्दों में बैठकर प्रार्थना करते हैं
तुम हमें सुबुद्धि प्रदान करो ।

सनो बुध्या शुभया संयुनक्त ।
मातेव पुत्रान् रक्षश्च ।
श्रियश्च प्रज्ञांच विधेहि नः ।।
शत्रुणां वृद्धि नाशाय ।।
शत्रूणां बुद्धि नाशाय ।
उत्तिष्ठ मातः स्वगुणै महिम्ना ।।
पुत्रान प्रबुद्धान कुरु मिज शक्त्या ।।

पुनराय उठो, सिंह पराक्रम की तरह जागो व फिर अभ
पुकार दो । श्री और प्रज्ञा दो ।

आमार घुचाबो मा तोर कालिमा ।
मानुष आमरा नहिं तो मेष ।।

ब्रह्मर्षि के स्वर में स्वर मिलाकर पुनराय तुम्हारी वंदना
व्रत लेते हैं :—

वन्दे भारत मातरम् हितरतां धर्म्मार्थदां मोक्षदा ।
माराध्यामृषि सेवितामनुपमां शश्मान्वितम् शोभना
फुल्लाजाम् शैलरम्यामशुविमल सलिलाम् श्यामा
रत्न भूषा
त्रैलोक्य प्रीतिगीताम् हिमगिरि मुकुटाम् सागरैर्धौत पादा
ॐ ह्रीः देश मातृकायै नमः ।

पुनराय तुम प्रसन्न हो। क्लीत्वं हर देशेशि, पुत्रत्वं देहि नः। देश के अत्याचार दूर हो, दरिद्रता दूर हो, भ्रातृ-विरोध दूर हो, महामारी दूर हो, अकाल दूर हो, अनावृष्टि दूर हो, अतिवृष्टि दूर हो, बाढ़ वगैरह समग्र दैवि विपत्तियां दूर हो, रोग व्याधि दूर हो। तुम्हारी गोद में छत्रछाया में तुम्हारे सब पुत्र सत्य, निष्ठा, औदार्य्य, आत्मबल, धर्म्म में आग्रह, वीरता व साहस के सहित रहें। घर घर में तुम्हारी पूजा हेतु मंगल कलसों की स्थापना हो। घर घर में तुम्हारी सन्तान पुनः संघ एवं संकल्प एवं संकल्पवद्ध हो। घर घर में वीर सन्तान को प्रसव प्राप्त हो। देश के शत्रुओं का पतन हो। देश का पंचमांगी दल छिन्न भिन्न हो जाये।

सर्व्व मंगल मंगल्ये महाशक्ति प्रदायिनी क्लीत्वं हर देशेशि पुत्रत्वं देहि देहि नः। नमस्तुभ्य: नमस्तुभ्यम् नमस्तुभ्यम् नमो नमः। प्रार्थना सफला सन्तु मातस्तत् कृपयान्विके॥

ॐ शांतिः हरी ॐ

महर्षि सत्यदेव के कतिपय उपदेश

(१) देखो ! हमारी माता चैतन्यमयी हैं। जननी के गर्भ से निकल कर जिसकी स्नेहमयी गोद में स्थान मिला ऐसी एकान्त आश्रयरूपिणी एवं स्नेहमयी हमारी देशमातृ का मां। जिसकी पवित्र वायु ने हमें प्रथम स्वांस दिया। जिसके खुले आकाश में गर्भावास की कारायातना से मुक्ति मिली वही हैं हमारी कल्याणदायिनी देशमातृ का मां। जन्मदायिनी के उदर में प्रायः दस महीने ही अवस्थान किया मगर प्रथम भूमिष्ठ होने के दिन से आखिरी स्वांस त्याग करने के दिन तक जिन्होंने अपनी गोद में स्थान दिया एवं वायु अन्न-जल प्रभृति पदार्थों द्वारा प्रतिपादन करती है वही हैं हमारी धातृरूपिणी देश मातृ का मां।

(२) जो व्यक्ति किसी भी रूप में मूर्ति पूजा के विरोधी हैं, वे भी अपने-अपने माता व पिता के चित्र की पूजा करने में नहीं हिचकिचाते। उसी तरह इस 'स्वर्गादपि गरीयसी' देश मातृका के मानचित्र को प्रतिदिन भक्ति से प्रणाम करने में कोई आपत्ति न होनी चाहिये।

बैसाख शुक्ल तृतीया यानी अक्षय तृतीया का शुभ दिन देश मातृका देवी की सारे दिन व्यापी पूजा के लिए निर्दिष्ट किया गया है। जो देशात्मक बोध के वास्तविक आग्रही हैं जिनके प्राण वास्तव में देश कल्याण कार्यों के लिए लालायित

हैं वे साल भर में सिर्फ एक दिनकी पूजाकी अपेक्षा में चुप नहीं बैठेंगे। बल्कि मां के मानचित्र के सामने खड़े होकर रोज भक्ति सहित प्रार्थना व प्रणाम करेंगे।

(४) भारत के चोलीस करोड़ सन्तान यदि प्रतिदिन मां के सामने एक मिनट खड़े होकर 'मां-मां' कहकर पुकारें और मां को अपने पूर्व गौरव पर प्रतिष्ठित होने के लिए कातर स्वर से प्रार्थना करें तो उस पुकार, उस प्रार्थना के फलस्वरूप एक ऐसी दैवी शक्ति का आविर्भाव होगा जो देश की समग्र दुर्बलताओं व विपत्तियों का नाश कर देश को पुनराय गौरव के शिखर पर प्रतिष्ठित करेगी। कातर आत्मा की पुकार कभी निष्फल नहीं जाती।

प्रार्थना के मन्त्र

ध्यान :—

वन्दे भारत मातरम् हितरताम् धर्मार्थदाम मौक्षदा।
माराध्यामृषि सेवितामनुपमाम् शश्यान्विताम् शोभिताम्॥
फुल्लाब्जाम् शैलरम्याम् शुविमलसलिलाम श्यामलाम् रत्नभूषाम।
त्रैलोक्य प्रीतिगीताम् हिमगिरिमुकुटाम् सागरैर्धौतपादाम्॥

प्रार्थना :—यदवक्षसिवय:जाता यदन्के नित्यसंस्थिता:।
पुनर्मल लयम् याताश्तं देशं पूजयाम्यहम्।
यदन्नैः पोषितोदेहो यद्जलैः जीवनम् मम।
यद्वायौ श्वसिमो नित्यम् तम् देशम् पूजयाम्यहम्॥

पिता पितामहो देवस्तथा मत्पूर्व्वंवंशजाः ।
यत्र जाता लयं त्रातास्तं देशं पूजयाम्यहम् ॥

कृतांजली प्रार्थना :—

दारिद्रं च महामारी दुर्भिक्षमुत्यातम् तथा :
एतत् सर्व्वं शमं यात् देशो भवतु शान्तिदः ॥
अतिवृष्टि रनावृष्टिर्वात्या प्लावनमेव च ।
ज्वरादिव्याधिभिः पीड़ा दूरीभवतुः देशतः ॥
स्वार्थलिप्सा तथा द्वेषो महोत्पीड़नमेवच ।
भ्रातृभिविरधो हिंसा दूरीभवतु देसतः ॥
सत्येनिष्ठा गुरोः श्रद्धा विश्वासो जगदीश्वरे ।
उदार्यान्च महत्वन्च आर्विभवतु सर्व्वतः ॥
शांति स्वास्थ्यं तथा दीर्घजीवनं संघशक्तिता ।
वीरत्वं साहसो धैर्य्यमाविभवतु सर्व्वतः ॥

प्रणाम :—

सर्व्व मंगल मंगल्ये महाशक्ति प्रदायिनी ।
पलीत्वं हरदेशेशिपुत्रत्वं देहि देहि नः ॥

ॐ शान्तिः हरिः ॐ

देवसंघ से प्रकाशित धर्म पुस्तकें :—

रचित :—श्री बाबा नरेन्द्रनाथ ब्रह्मचारी

हैमवती दर्शन मूल्य—१), हिन्दी—१)। मंत्र व पूजा रहस्य (तृतीय संस्करण) मूल्य—२) ५० न० पैसा हिन्दी—२)। साधनार गृहे—(तृतीय संस्करण) मूल्य—प्रथम खण्ड—३) ५० न०पै०, सजिल्द ४) २५ न० पै०। द्वितीय खण्ड यंत्रस्थ सत्येर-पथ व आमिर संधान (बंगला द्वितीय संस्करण) (हिन्दी प्रथम संस्करण) मूल्य—१)। ब्रह्मर्षि श्री श्री सत्यदेव मूल्य—१) ५० न० पै० सजिल्द २)। प्रतिमाय प्रानप्रतिष्ठा मूल्य—१) हिन्दी १)। चिट्ठी ते साधना व उपलब्धिर कथा—मूल्य—१) ५० न० पै०। दशमहाविद्या के ? मूल्य—५० न० पै० हिन्दी ५० न० पै०। नवदुर्गा के ? तृतीय संस्करण—मूल्य—५० न०पै हिन्दी ५० न० पैसा। आशार वानी सप्तम संस्करण मूल्य—६ न० पै० व हिन्दी ६ न० पैसा।

प्राप्तिस्थान :—

(१) महेश लाइब्रेरी—२/१, श्यामाचरण दे स्ट्रीट, कालेज स्क्वायर कलकत्ता।

(२) देवसंघ मठ—पो० देवसंघ, भाया देवघर, (एस० पी०) बिहार।

(३) देवसंघ मठ—बड़ा बहेरा (कोन्न नगर) जि० हुगली।